

दवपञ्चिमस्तीसदाभपनिनक्रतु ॥ उलनस्तीसदापातुसधा ज्ञातस्वरूपधक ॥ ॐ लीनकाकनीदवी कवचंदवइत्युत ॥ प्रागठका
लेप (०) यमु साहीरुलमाप्रयात ॥ पूजाकालेप (०) यमु कवचसाधकोलमठ ॥ कीर्तिणीकाकिमधासुवहिताएवगिध
वी ॥ क (०) धाधनयदगत कवचमस्वरूपकी ॥ यद्धजयमधाप्राति, शुगवादेवसाधक ॥ कवचधनययमुसाधकादकि (०) उ
ऊ ॥ देवामनूयार्गधर्वा वेषधनस्यनर्त ॥ य ॥ कवचंठिनसायमु धनयदकमानस ॥ कनक्कागस्यदेवादि अनिमाद्यसि
क्षय ॥ शुजपुंविमविश्या ॥ कपलनवसिर्ग ॥ नजगनचसव ॥ ४ कृत्वा धाधनयसूधी ॥ स्त्रीमहर्गिल श्री अर्कमद
ह रूपधक ॥ यस्मै कस्मेनदातव्यं नपकोठधं कदाचन ॥ निष्ठायएकियुकाय साधकायपुका ॥ य ॥ अन्यथासिद्धिहा
निस्थात्सयेमगन्मनानम ॥ एवस्त्रहामहादवि कपिर्गकवचं ॥ नदयंकस्यचिरुद यदिक्कदात्मनाहिर्ग ॥ श्री

॥ धर्मपुत्रपदापापपापहनिनी ॥ सर्वाऽऽनीयायाश्चनमाकवाचमी । वाद्युमीसासिनीनक्रुदिविदिक्कव
 लिपिया । गहनक्रुदवनीवननक्रुदेयहा ॥ क्रुमुचनक्रुकोमाख्याधर्मनक्रुचलिका । ॐ ह्यतत्पनर्मगुर्कका
 माय्याकवर्चसुली ॥ सर्वसिद्धिपदं विसेयामविजयपदं ॥ नाक्रुसासुगवगालाक्रुष्माऽपन्नगगथा । कवन्धा
 पुनजकिन्यापिध्मचावक्रुनाक्रुसापुमधदिगधवेवलेनवाशाष्टुदवता । पा० नागुनदं वगिदधदिक्कपला
 यन । सर्वयक्रुहर्लचेव सर्वदानरुलाधिकी । लहयनागुसंदहासुयसत्यमयादिर्गलिधितपूक्तकगहयस्य
 मकिमहध्वनीगननाकल्यवक्रुस्याद्वर्चधर्नपेनानन ॥ ॐ ह्यवक्रुगनाजाखीकिमन्यध्मगुमिक्तसि ॥ ॥
 ॐ तिथीमनूतक्रुगिवपार्धगीसत्वादेष्टीवालकोमानीदव्याकवर्चसमाफी ॥ ॥ ॐ नमः ॥ गिवाय ॥ नमस्तु

२१

नमस्तद्वैविध्यव्यापिमहमीध्वनी । वक्रुगिवमयवर्मसर्वनक्रुकरं ॥ ॐ चोद ॥ समासीनायथाकल्पितमासन ॥ जितयि
 धाजितपाधधुिकयक्रुवमवययी ॥ क्षत्पुष्टीनीकानुनसनिविर्लस्वगुसायाफनूलावकागी ॥ जितयिर्लसुक्रमेनकपाश्वध्म
 यत्पनानन्यमयमहमी ॥ ध्मनावधुगाखिलकर्मवन्ध ॥ चिनीनिदानन्यनिनग्रधेगाषण्कर्न्याससमाहितात्मा गिवनक्रु
 यीत्कवचननक्रु ॥ मापागुदवाखिलदेवगात्मा । सैसानक्रुयपतिर्गगलीन । यन्नामदिव्यवनमक्रुमूलधूनीपुमसर्वमय
 रुदिर्ल ॥ सर्वगमीनक्रुविष्वमूर्लिध्मनिर्मयानन्यसमधिदात्मा ॥ ॐ ह्यनदीयानूतक्रुकिनेक ॥ सर्वध्वन ॥ पागुएवा
 द ॥ धातु ॥ धातुस्वरूपनचिर्लिविष्ववायात्सुमोगिनि ॥ ध्ममूर्लि ॥ धामास्वरूपननृध्मकनागि । सजीवन ॥ ध्म
 वगुमीजल ॥ कल्याचसानुवनानिद ॥ सर्वासिध्मानुयगितिल्लीठा ॥ सकालक्रुदावगुमीदवा ॥ नदीध्या

दितीतत्रखिलजपायात्॥ प्रदीपविशुद्धनकावरासासदावनालीनिकुभनरुहः॥ चतुर्मुखस्तुनूषक्तिनगु॥ पायाकनक्रु
 ममीरुत्नी॥ कभनवर्दाकृष्णपाठाभूलटकाक्रमालागिकक्षान्दधानः॥ चतुर्मुखा नीलनेचिक्तिनगु॥ पायादद्यानादिभिनि
 र्स्या॥ कृन्द्द्वर्षस्फुटिकावदागं॥ वंदाक्रमालावनदारयाकृ॥ दिव्याष्टुर्वकडनूपराव॥ सञ्जाथज्ञानावशुमपिनि
 यीवलाक्रमालीरयईकहस्तनाङ्कि॥ स्फुटसमानवर्द्ध॥ गिलाचनचानूचतुर्मुखा मपिपायाइदीर्घादिभिवा मदेव॥ ३२
 वंदायैष्टिकृष्णपाठाभङ्गी कपालटकखण्डिलपाणि॥ सिगद्युति॥ पञ्चमुखवतात्तामीभनमूर्द्ध॥ पनम॥ प्रकाश॥ सूर्यानि
 मव्यात्ममचन्द्रमोलिलालममाव्यात्ममहालनगु॥ नगुममाया हगनगुहानि॥ नाभनक्रुविष्वनाथ॥ पायाकुर्तिम
 धुनितगकीर्ति॥ कपालमव्यात्मनर्कपाली॥ वक्रसदानक्रुपञ्चवक्र॥ किर्कासदानगुक्ति॥ कर्कगिनी॥ भवेगुनी

लकैर्ल॥ पाणिद्वयपापुपिनाकपाणि॥ दार्म्यलमव्यात्ममधर्मवारु॥ वक्रैर्लुलैदक्रमुखाकव्यागु॥ समादनीपापुगिनीद्वधत्वा
 मधर्मममाव्यात्मदनाककानीहनर्गगागाममपापुनाहिपायाकृटिनीवनासो॥ उरुद्वयपापुक्रवेनमिगुज्ञानद्वयमङ्गदीपव
 नाव्यागु॥ ज्ञेयायुर्गयुगवकैरुनव्यात्पाक्षेममाव्यात्मनवेदपाद॥ महव्यन॥ पापुदिनाश्रया मममाव्यात्मवतुवामदेव
 ॥ जिर्ध्वक॥ पापुक्तिगितीययामेववर्ध॥ पापुदिनाकयाम॥ पायातिष्ठदोभाभि॥ भवनामगिभधनानक्रुम
 निभी॥ (येनीयति॥ पापुनिष्ठनमृत्पुञ्जयानक्रुमप्रराग॥ ग्रहस्तिर्नक्रुसङ्कीर्मास्मान्॥ सदापापुवहि॥ स्ति
 नमर्मा॥ तदननपापुपति॥ पञ्चनी सदाभिवात्रक्रुमसिमकागु॥ निर्वीगव्याहुवनेकनाथ॥ पायाहुजकप्रमथदि॥ ना
 थ॥ वंदाकवधावतुर्मानिषर्द्धममाव्यय॥ पापुनिवसयान॥ मा॥ र्जषमनिक्रुगुनीलक॥ ४॥ (नेलषूइ॥ र्जषूचवेगुपा

[illegible][illegible]

मदर्थनं ॥ न गथा लुगहनर्ष, सानमया नूगं शुको ॥ कर्णधातुगनाथं च पगनाथं कपालया ॥ नाभपूजायथा ॥ अथ सर्वं
हस्तलक्षितं ॥ अनादिगनाथस्य, अकिहर्षगं न्यस्य ॥ कंधादेत्येवमनं वा होवा तुलनं कर्षं, पा ॥ भोकपालिर्न
न्य हृदयं मूगमालिनं ॥ उदयं च सदा तुल्यं कर्ण ॥ पा ॥ अर्धेयस्य ॥ अर्धेयस्य, कनया कामचानिर्णं ॥ कर्णपा
लं पृष्ठदं ॥ कर्णमनालिदं कं ॥ पा ॥ अर्धेयस्य, कनया कामचानिर्णं ॥ कर्णपा
ला नूगाधूनानाव, तुल्येयानकपायिनी ॥ तुल्येयपाइका सिद्धिं, पादपृष्ठसुने वनं ॥ अपादमस्तु कं वं, अपत
उच्चानकं न्यस्य ॥ पूर्वगमनं हर्षं च, दकि ॥ अर्धेयस्य ॥ अर्धेयस्य, कनया कामचानिर्णं ॥ कर्णपा
लि वं च नैव, अथे च दिगं वनं ॥ वायवं सर्वलुगं ॥ अर्धेयस्य, कनया कामचानिर्णं ॥ कर्णपा
लि वं च नैव, अथे च दिगं वनं ॥ वायवं सर्वलुगं ॥ अर्धेयस्य, कनया कामचानिर्णं ॥ कर्णपा

[illegible]

सिद्धि कर्त्तृ साक्षात् सर्वपापविभाचनं ॥ सर्वसंपत्कर्त्तृ साक्षात् सर्वदुःखकर्यकर्त्तृ ॥ ग्रहपीडाक्षानाग्री यवान्युच्छकादयः ॥
 प० नाक्षत्रद्वयवनादीमाया नित्यक्रिया ॥ १॥ धनधन्यकर्त्तृ देवी कवचं त्वनपूजितं ॥ समानास्ति महोभानि जलौक्यवच
 स्पव ॥ हनिउत्समहोभानि कवचं सेवतु तले ॥ किमन्येव सदानाथे यो गेयुर्ध्वपतामिया ॥ १॥ ॥ ॥ निविध्यमानं
 ग्रहनिजागृह्येककवचं सुमार्गं ॥ कृतं ॥ ॥ श्रीगुरुचरणकमलस्थानमस्तु ॥ ॥ दंबुवाच ॥ दवेदोपनमं भनत ॥ २५
 कान्ते ग्रहकानक ॥ कलधर्मनगावीना नगेषां सिद्धिदायकं ॥ १ ॥ कृहिमेकपयादीनां यादेषी ॥ निममापनी ॥ साधकानां
 हितार्थं यो मुक्तिं मुक्तिपदायकं ॥ २ ॥ श्रीगुरुदेव उवाच ॥ ६॥ देवीपवत्रामि गुह्या गुह्यतमं महत् ॥ लोकाय कान
 र्त्तृ प्रह्वं गवपित्यावदामि मे ॥ ३ ॥ अथ प्रह्वं कस्यापि नाख्यात् कवचं मया ॥ दक्षिणवहव ४८० निमं गुरुध्यानं

[illegible]

क्रियायां पाठमसदा॥ पनविवातनन्दनाथनक्रान्तमिनि ४ सदा॥ वकि सूर्यानन्दनाथे हा लेववकृत्स्नसूर्य॥ कोलेतानन्द
 नाथमनेचपाठसूर्यया॥ ७३ कृष्णानन्दनाथे ७४ गुणमनक्रुत्स्नसूर्य॥ कृष्णानन्दनाथे सिकायाचनक्रुत्स्न॥ का
 मध्वानन्दनाथे मरुवमपाठुदनेयुक्त॥ ७५ तिदिथोयसूर्यमदवीसर्वविनीवगु॥ कष्टादोनाहियर्यकसिद्धोयगु
 न्वपिथ॥ ७६ योगानन्दनाथे मपाठुदनेयुक्त॥ ७७ विनानन्दनाथे गुननक्रुत्स्नसूर्य॥ समयानन्दनाथे २७
 मेकटिनालिचनक्रुत्स्न॥ ७८ तिदिथोयगुन्वनक्रुत्स्नसूर्य॥ आधानपाठुमानोयगुन्व ४ कृष्णानन्दनाथे ७९
 गणानन्दनाथे नक्रुत्स्नसूर्य॥ विद्वानन्दनाथगुनक्रुत्स्नसूर्य॥ विमलानन्दनाथे मद्रावूनक्रु
 यत्सदा॥ मदनानन्दनाथे ८० कृष्णानन्दनाथे ८१ गुनानन्दनाथे ८२ गुल्लो ४ पाठुमसदा॥ लिलानन्दनाथे

गुननक्रुत्स्नसूर्य ४८४॥ ८३ स्वात्मानन्दनाथे मपाठुलिचनक्रुत्स्न॥ कृष्णानन्दनाथे नक्रुत्स्नसूर्यपादया कृष्ण॥
 ८४ यवमानवोनवोद्यसन्नायादिपापादया ४८५ गुनमानक्रुत्स्नसूर्य ८६ नानपनमागुन ४८७ पनापनगुनसूर्य
 पाठुमानमध्वन ४८८ पनमहिगुन ४८९ वपाठुमावायूमल्ले ४९० निवादिगुन ४९१ साकाका ४९२ मल्लेवगु ४९३ डा
 गुन ४९४ पाठुपूर्ववा ४९५ गुनगुनवागुन ४९६ दक्रुत्स्नमगुनवागुन ४९७ नेयुत्स्ननेयुत्स्नगुन ४९८ वक्रुत्स्नगुनपाठुम्यावायुव्यामा
 नूनागुन ४९९ उल्लेनगुनक्रुत्स्न ४९० मेठान्यामीध्वनागुन ४९१ उर्ध्वपाठुगुनवक्रुत्स्न ४९२ अनक्रुत्स्नगुनपाठु ४९३ वमिन्द्रादया
 दक्रुत्स्नक्रुत्स्नगुनवामम ४९४ निनसपादयर्गपाठुसिद्धोयसिद्धका ४९५ मानवोद्यगुनवावक्रुत्स्नपादका
 ४९६ सर्वगुनक्रुत्स्नच ४९७ वगसाधका ४९८ स्वात्मानन्दगुनक्रुत्स्नसूर्य ४९९ यमक्रुत्स्नविशवक्ता ४९० यमक्रुत्स्नवर्चदविचक्रुत्स्न

लोकादिहस्तर्ह ॥ तव प्रीत्या मया रव्यात् न वार्चयन् कुरु विना ॥ पूजा कालप ॥ ७ ॥ यस्तु जप काल विमुक्त ॥ ८ ॥ जेला क
 इह लोके न तु किं मुक्तिरुल्लस्य ॥ सर्वमकुलं लोके न तु सर्वमकुलं लोके न ॥ सर्वमकुलं लोके न ॥ ९ ॥ कवचं तु न ॥
 अष्टम्या ॥ १० ॥ न तु रव्यं च लिखीत मंगलं सूर्यं ॥ कवचं तु न देवस्य मरुतः ॥ ११ ॥ एवा सन ॥ पूजयन् धूप दीपाद्यैः ॥ सुखा वि
 सितं सूर्यं ॥ १२ ॥ तप्यन् धूपं न मंगलं ॥ साधकैः ॥ १३ ॥ इह च न सा ॥ धनयत्नं कवचं दवी ग्रह हस्त रया पहि ॥ यथा न शक्तिः ॥ १४ ॥
 लोकाः समुक्ता एव वन्द्य नातः ॥ १५ ॥ एतन् कवचं पनात्पनतं न दिव्यो घाति द्यो घवान् ॥ मोक्षे घक मठा सुखा थापन गुण
 सा का पुना संलिता ॥ १६ ॥ एतन् कवचं क मंगलं य पठिन् विना मरुतं ॥ १७ ॥ ध्यात्वा धीमवर्नं क विद्ये मपनं त्वानं च
 मर्किलं तु ॥ १८ ॥ तिथी महा गम सा ल विध्वसा नाद्या न ध्यात्वा तु न कवचं समाप्ति ॥ १९ ॥ क मध्व ॥ ॥

१० नमो ग ॥ १० ॥ कर्म ह्यमनसा वाचा प्रपन्नो मि विनायकः ॥ गगन किमहा धारं संमान पाप मर्किलं ॥ ११ ॥ वामं धृत्वा धनि धरी स
 विमन च कर्षं सि धुवा नि सुना रि ॥ १२ ॥ प्रसूतं चार्कं पूज्यं गगनं स वसनं वासि र्नादि र्गं च ॥ १३ ॥ स्यात्प सीप दं न स क कुल गि नि दं च ॥ १४ ॥ न क
 न कल्या नं नृप मा ना विन हृद वती विप्रि हृदं ग ॥ १५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ एग वन् ॥ १६ ॥ धुमि का मि वि स न दाय था क र्थ ॥ गव
 जला स्य महा स्य स्त्र प कु वि ॥ १७ ॥ धी न दि क न ध्वन वाच ॥ सुव ना ज स्य मा हा स्य प्र व का मि स मा य ग ॥ १८ ॥ य न ल ल
 ग ज ला ॥ १९ ॥ सूर्य वा पि ता द धी ॥ य प्रा क न लि ता वि द्वा न व ध्र वा पि म र्किलं ॥ २० ॥ विषु वा ये काल ष पृ ष्ठ वा स म या क न ॥ सर्व द
 वी प न र्ज तु ॥ २१ ॥ सुव ना ज सु वा र्क म ॥ यत्न ल ल र ग स य रु क्ते ध्व च तु म् र्ग व ॥ २२ ॥ गग पु वा रु व र्क स्य वा ग्नि र ति वि ह र व न ॥

४६ स्वतिसमा दृष्ट्या पुनर्दत्तसमाधिया ॥ गुरुसादित्यसंका (गम) लार्जवनसमानय ॥ धनदत्तसमादानतथाविरूपवियह ॥ धर्मनाकसमा
 न्यायमिवलकासयासन ॥ प्रतापवक्रिसंका ४४ प्रभादहाभिना ४५ म ४॥ बलनमनतातुल्या एवताउक्रवर्चसा ॥ सर्वतत्वाधविज्ञा
 न मयावसमगविज्ञ ॥ नवमगतिसं ४५ जयसुचमनूर्तम ॥ सर्वकामानन ४५ प्राप्य तु काला गमसुसुक्तलान ॥ सधनीनस २५
 नंदस्यपदंनस्यचमूदनि ॥ प्राप्य ह गुणमिदं धर्म्यं तु काला गमन्य (अ) धिगान ॥ अरुधावीत (अ) कथुनिना रीका निनामय ४॥ ज
 नामनधनिर्मका वदधमकार्थकाविद ४॥ सिद्धिचानधगधर्वदयविद्याधनादिलि ॥ संचयमानानुनिलि ४५ स्यामानादिनदिन ४॥
 विचनस्यविलानुलाकानुवध्व (अ) ४५ समनेन ४॥ उर्वविनायूर्निर्वाहीदवस्यानचनारव ॥ सुवनाजस ४५ जहामचयतस

र्वकिलिखे ४॥ सर्वसिद्धिमवाप्तापि पुनात्यासफसंकुल ॥ सुनाजसमन ४५ पुनरुदया (य) विलिखन्पठनपि ॥ अस्मानमनसिद्धिचान (लो) म
 निनलि ४५ प्रत्यहवमवपुश्च ॥ तनगिचलवचर्क सर्वमाहानिर्हति, क्रियगिचयनिवादी, मान्यतर्वधुव (अ) ४॥ अखिलमपिचलाक
 क्रम्यतामासुनिखावजतिमूनि लिनिर्गुं ४५ स्वर्गधामसत्य ४॥ याजयति सुवनाजम (अ) कर्कक्रमतर्मपदमतिमनूष्य ४॥ चानध
 सिद्धिसुनेन लिर्वद्यायातिपदं पनर्मसविमूर्क ४॥ जयसुवनाजार्यामिमिप्रागसुवा रुर्म ॥ तस्यापनार्धक्रमतसर्वदेवविना
 यर्क ॥ सर्वत्रिर्हनिवेदिद्युष्टिपवधुसमकत ४॥ अ (अ) घालिर्जसधक्रसयकिनलिर्वचति ॥ यस्यचप्रधालक्रीकयाक्रा
 धुचिधयिनी ॥ किङ्कनामीतिवेहितापुनस्काहस्यगिष्टिगि ॥ तस्माच्चि ४५ यसंगकुमगिलक्रचिचक्र ४॥ तवनाजंजयतर्क

धर्मकामार्थसिद्धयः॥ आधिवाक्षसु ६॥ सुविमल ४५५॥ कृत्वा दिव्य ॥ तथैव न्यपूवा कृतस्मान्मूर्कोरुवरया ॥ सुवनाई अपि त्वाथा मार्गजगत्
 किमानवा ४॥ नजगुयाय गतगधोनवाद्यादिता रय ॥ यथावनिक्षेपवानाम ॥ विधानविधायक ४॥ तथसुवावनिक्षेपसुवानीसुमुनिर्मि
 त ४॥ अवति ॥ यथादवा विघ्ननाज विनायक ॥ गदालाकापचानार्थपाकार्य ६॥ सुनासुव ४॥ विनायकपिथकनादवस्यददकंगम ४॥
 जय ४॥ सुव ४॥ यत्न ४॥ धर्मकामार्थसुक्रय ॥ ॥ श्रीमहेश्वर उवाच ॥ ॥ अस्य श्रीविनायकसुवनाजमरुस्य श्रीनन्दिकेश्वरपृथिवी २०
 पृथगगया ४॥ श्रीमहागयापिदवतागवीर्ज ॥ यो ६॥ कि ४॥ धर्मार्थकाममाक्रार्थयय ७॥ विनियोग ४॥ ॥ उनर्पचासगधमध्यस्ति
 हनस्वगधनायक ॥ वाभाननस्तिगादवीसर्वीरुननरुषिधी ॥ प्रसमानसुनदार्थ ४॥ सर्वभाविनायक ॥ कल्यानला श्रीसोरागधजयपू
 रविबर्धन ॥ सिद्धनधुनिपानिधुनिगर्कस्य ७॥ गगमनाहनसुर्गकनिनाजबर्क ॥ सर्वय ६॥ विविनापथमप्यप्यपायादसागधयति

२०

सकलार्थदाता ॥ पा ६॥ यस्य च मादका क्रविमलदक ४॥ वृथानायधवदार्मदमलनागवदनवालापवीगादल ॥ यक्रुचसुर्गकिननेत्रा ॥ सदावन्दित
 विघ्नभीसतगन्मामिठिनसाकामार्थसिद्धिपद ॥ ॥ सुवकाउपयवकामाननीन ॥ थयुता ६॥ लविहतादीनक्रुचान्निधीगा ६॥
 धनपीमार्थविनियोग ४॥ गजवर्कगजाकाकालनकावर्धनपद ॥ साधवस्यपसादार्थपाठार्कभाधनधुर्त ॥ प्रसन्नायहसौचधायगम
 दसात्कट ॥ सिद्धननकविम्वारकैकमात्रविग्रह ॥ नागयक्षपवीगाढीमखराटिहविर्त ॥ नक्रुमालालकालसिद्धिदसर्वकामद ॥ विनायकहम
 वरुचपुर्वीरुपनसुपाठार्कभाधनयहसुध्वात्पा ७॥ ॥ कुंकारनमसुर्गवक्रुगिवमक्रुनमव्यय ॥ यमानतिवदरुगपययविनायक ॥ यत ४॥
 वृत्तिजगतीय ४॥ साक्रीदयस्ति ४॥ आधारताविध्वस्यतपययविनायक ॥ स्पष्टसादका ४॥ पानकिनिमिषीतिच ॥ प्रवर्ककैर्कलाका
 नाप्रधामामिविनायक ॥ भिखायकादभगुल्येस्तिर्गुर्गवर्त ॥ मूजकियमनीचाया ॥ स्पष्टययविनायक ॥ लीलयालाकनकार्थ

निदयक

[illegible]